मन के तम को दूर करने का पर्व है महाशिवरात्रि

भारत में अनेक पर्व मनाये जाते हैं। कुछ पर्व मनुष्य को खुशी प्रदान करते तो कुछ आर्थिक और सांस्कृतिक विरासत की पहचान कराते। परन्तु शिवरात्रि के पर्व से मनुष्य के अन्दर व्याप्त अज्ञानता का तम दूर होता है। सभी पर्वों में महाशिवरात्रि सबसे महान और अलौकिक है जिसमें मनुष्य अन्दर के तम को दूर कर परमात्मा का ज्ञान-प्रकाश अर्जित करता है। देवों के देव महादेव परमपिता परमात्मा शिव की पूजा शिवलिंग के रूप में की जाती है। शिवलिंग को 'ज्योतिर्लिंग' भी कहा जाता है। द्वादश ज्योतिर्लिंग पूरे भारत में विख्यात हैं जिनका पूजन और अर्चन करना प्रत्येक धर्मपरायण भारतीय की पुण्य आस होती है।

शास्त्रीय दृष्टिकोण से शिव कल्याणकारी स्वरूप का परिचायक है तथा लिंग 'चिन्ह अथवा प्रतिमा' को व्यक्त करता है। इस प्रकार शिवलिंग अर्थात कल्याणकारी शिव परमात्मा की प्रतिमा। वैसे भी ज्योतिर्लिंग परमात्मा शिव के ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप को ही व्यक्त करता है। प्राय: सभी धर्मों में परमात्मा के यथार्थ स्वरूप को नूर, डिवाईन लाईट, ओंकार ही माना गया है। अत: शिव सभी मनुष्याताओं के परमपिता हैं।

देवेश्वर शिव की महिमा अनन्त है, उनके कर्म दिव्य हैं और जन्म अलौकिक है। इसी दिव्यता और अलौकिकता के कारण ही उनसे जुड़े प्रसंग रहस्यमय बनकर किमवदन्तियों में बदल गये हैं। केवल परमपिता परमपिता परमात्मा शिव के बारे में ही कहावत है कि उन्हें भांग, धतूरा इत्यादि प्रिय है तथा सांपों की माला और भूत, प्रेत उनके 'गण' हैं। जितनी कथायें और रहस्य भोलेनाथ शिव के बारे में कही जाती हैं, उतना और किसी भी देवी देवता की चर्चा नहीं होती। आज के सन्दर्भ में यह आवश्यक हो गया है कि महाशिवरात्रि के वास्तविक रहस्य को समझे और परमात्मा द्वारा हो रहे दिव्य कार्य में सहयोगी बनें।

भारतीय परम्परा के अनुसार शिवरात्रि का पर्व प्रतिवर्ष फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की अमावस्या के एक दिन पूर्व मनाया जाता है। इसके बाद शुक्ल पक्ष का आरम्भ होता है तथा कुछ ही दिनों बाद नव संवत् अर्थात नये वर्ष का आरम्भ होता है। सभी देवी-देवताओं के जन्म दिन मनाये जाते है। परन्तु परमात्मा शिव के साथ रात्रि शब्द जुड़ता है। परमात्मा द्वारा अज्ञानता की रात्रि में किये गये दिव्य कार्यों के कारण ही उनके साथ रात्रि शब्द जुड़ता है। यह रात्रि हर 24 घंटे में आने वाली रात्रि नहीं है बल्कि पांच हजार वर्षों के बाद घूमने वाली सृष्टि चक्र में आने वाली अज्ञानता की रात्रि का है। इस समयावधि में मनुष्य अज्ञानता की रात्रि में भटकते हुए स्वयं, परिवार तथा समाज की मानवीय मर्यादाओं को भूल जाता है। परमात्मा की पहचान लुप्त हो जाती है। इसलिए मनुष्य-मनुष्य के खून का प्यासा होकर अधर्म और अत्याचार की सीढ़ी चढ़कर आसुरी प्रवृत्ति को अपना लेता है। जब इस संसार में धर्म का स्थान कर्मकाण्ड, कर्म का स्थान आडम्बर ले लेता है। संसार में चारों ओर पापाचार, अनाचार और भ्रष्टाचार का ही पाप लोगों के सिर पर चढ़कर बोलने लगता है, तो वही काल परमात्मा शिव के अवतरण का होता है। फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी आत्माओं के अज्ञान-अंधकार अथवा आसुरी गुणों की पराकाष्ठा का प्रतीक है इसके पश्चात शुक्ल पक्ष परमात्मा शिव द्वारा 'ईश्वरीय ज्ञान' और 'राजयोग' द्वारा

पवित्र और सुख-शान्ति सम्पन्न नई सृष्टि के प्रारम्भ का प्रतीक है।

वर्तमान कालखण्ड में तमोप्रधानता और अज्ञानता अपनी चरम सीमा के अंतिम छोर पर पहुंच चुकी है। चारों ओर पांच विकारों का हाहाकार एवं घमासान मचा हुआ है। धर्म सत्ता कर्त्तव्य-विमुख हो चुकी है, राज सत्ता पथ भ्रष्ट हो चुकी है एवं विज्ञान सत्ता विनाश की ओर कदम बढ़ा चुकी है। चारो ओर अंधकार ही अंधकार है। दिन के प्रकाश में भी बुराइयों और अज्ञानता रूपी रात्रि का चारों ओर साम्राज्य छाया हुआ है। यही घोर अज्ञानता रूपी रात्रि में परमात्मा शिव के अवतरण का समय है। इस नाजुक समय में स्वयं परमपिता परमात्मा शिव अवतरित होकर अज्ञानता के विनाश और नयी सतयुगी दुनिया की स्थापना का दिव्य कर्त्तव्य कर रहे हैं।

शिवरात्रि के अवसर पर शिवलिंग पर बेल-पत्र, बेर, धतूरा इत्यादि खाद्य-अखाद्य पदार्थ चढ़ाये जाने का रस्म-रिवाज प्रचलित है। भक्तजन इस दिन शिव मन्दिरों में विशेष रूप से रात्रि जागरण करके शिव की अराधना करते हैं एवं अन्न-जल का व्रत रखते हैं। परन्तु परमात्मा शिव हम मनुष्यात्माओं द्वारा केवल उपर्युक्त भौतिक वस्तुओं को चढ़ाने मात्र से ही प्रसन्न नहीं हो सकते। हजारों वर्षों से शिवरात्रि के दिन व्रत, उपवास और पूजन अर्पण का क्रम तो होता ही आया है फिर भी आज तक शिव प्रसन्न नहीं हुए हैं। वर्तमान समय इसकी सार्थकता को सिद्ध करते हुए यह आवश्यक हो गया है कि अपने अन्दर छिपे उन पांच विकारों की आहुति परमात्मा को दे जो मनुष्य को मानवीय मूल्यों से दूर कर आसुरीयता में तब्दील करते हैं। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, कुसंस्कार एवं आसुरी प्रवृत्तियों को परमात्मा के ऊपर अर्पण कर उनसे मिलने वाले सुख-शान्ति और पवित्रता को अपने जीवन में धारण करें तो मनुष्य से देवत्व की ओर अग्रसर होंगे और सुख शान्ति से भरपूर हो जायेंगे।

आज के सन्दर्भ में यह जरूरी है कि हम इस पर्व के रहस्यों को गहरायी से जानकर अन्तर्मन से मनायें। समय की गाड़ी कभी भी रूकती नहीं है। समय निकलता रहेगा, हम अंधेरे में पर्व मनाते रहेंगे तो समय के अन्त में पछताने के अलावा कुछ भी नहीं बचेगा। इसलिए जरूरी है कि हम परमात्मा के गुप्त अवतरण को पहचान अपने जीवन को श्रेष्ठ और महान बना लें। यही महाशिवरात्रि का सर्व मनुष्यात्माओं प्रति संदेश है।